B.A. II Hindi Hons.

संतकाव्य की सामान्य प्रवृत्तियाँ

डॉ० सावित्री चन्द्र पाठक
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद

संतकाव्य हिन्दी साहित्य का अनोखा काव्य आन्दोलन है जिसके सहभागी समस्त कवि भारतीय समाज के दलित एवं शोषित समुदाय से आते हैं। यही कारण है कि इनकी कोई भी औपचारिक शिक्षा-दीक्षा नहीं थी क्योंकि उनके लिए शिक्षा की सुविधा उपलब्ध नहीं थी इस कारण से भी वे शिक्षा एवं शास्त्रों से दूर रहे। हम कह सकते हैं कि संतकाव्य राजदरबारों की तरह पालित पोषित नहीं होकर प्राकृतिक कठोरता एवं न्यूनताओं से उपजा सर्वथा अकृत्रिम सौन्दर्य से युक्त काव्य है जिसकी शोभा कालजयी है। इसमें जन जीवन से जुड़ी अनुभूतियों में डूबी आध्यात्मिकता जन सामान्य के लिए सहज ग्राह्य है। इसमें ईश्वर की साधना की न तो शास्त्रीय व्याख्या है और न कोई विधि निषेध। इसीलिए यह जन सामान्य के प्राणों में उतर जाने वाला साहित्य है जिसकी कुछ सामान्य प्रवृत्तियों को निम्नांकित रूप से विवेचित किया जा सकता है—

① निर्गुण ब्रह्म में विश्वास :— संपूर्ण संतकाव्य एक ही विश्वास पर टिका है कि ईश्वर का कोई आकार नहीं होता। वह विराट है, असीम और अनंत है भला उसे किसी आकार में कैसे बांधा जा सकता है? यदि ऐसा हुआ तो उसकी असीमता पर ही प्रश्नचिह्न नहीं उठ खड़ा होगा? इसीलिए समस्त संत कवियों ने एक स्वर से निर्गुण ब्रह्म को न केवल स्वीकार किया है वरन् ईश्वर के सगुण स्वरूप का निषेध भी किया है। जिस समय यह काव्य लिखा जा रहा था ठीक उसी समय सगुणवादियों द्वारा उनके आराध्य राम का यशोगान गाया जा रहा था। संत कवियों को यह उपयुक्त नहीं लगा और इन्होंने राम के सगुण स्वरूप का ही विरोध कर दिया। कबीर अक्खड़ स्वभाव के तो थे ही उन्होंने पूरी प्रामाणिकता और आधिकारिक रूप से यह घोषणा

कबीर — "दशरथसुत ~~[illegible]~~ तिहुं लोक बखाना,
राम नाम का मरम है आना।"
चाहिए: "निर्गुण राम जपहु रे भाई
अविगत की गति लखी न जाई।"

उनका ब्रह्म अद्भुत है। वह पुष्प की गंध से भी पतला है वह संपूर्ण
सृष्टि में इस तरह रमा हुआ है जैसे तिल के कण-कण में तेल
फैला होता है या फूलों के हर कण में गंध का वास होता है। ठीक
वैसे ही हर प्राणी, हर जीव के अंदर वह ब्रह्म निवास कर रहा है। वह
ऐसा ब्रह्म भला सीमा में या एक विशिष्ट आकार में कैसे बंध सकता
है? इसीलिए ये संत कवि सगुण का विरोध और निर्गुण को
स्वीकार करने का आग्रह करते हैं।

② बहुदेववाद तथा अवतारवाद का विरोध:—

संत कवि बहुदेव तथा अवतारवाद के घोर विरोधी थे। उनकी स्पष्ट
मान्यता थी कि ईश्वर अवतार नहीं लेता। वह कहीं अन्यत्र लोक में
निवास करता है जिससे धरती पर आवश्यकतानुसार आने की आवश्यकता
पड़ती है। वह तो सृष्टि के कण-कण में समाया है। वह हमारे जैसे समस्त
प्राणियों में निवास कर रहा है। जो इस सृष्टि में सदा उपस्थित
है भला वह अवतरित कैसे हो सकता है। उसके अवतरण की बात
तब पैदा होती जब वह किसी और लोक में निवास करता। यहाँ तो
घट-घट में रमा-बसा है उसे अवतरण की आवश्यकता ही नहीं है।
इसी प्रकार उनकी मान्यता है कि ईश्वर एक है अनेक नहीं। ऐसी स्थिति
अनेक देवताओं के अस्तित्व की बात करना गलत है और ये मूर्ख[illegible]
कारण ईश्वर जब एक ही है अखंड है तो भला उसी एक ईश्वर
खंड-खंड होने की कल्पना भला कैसे संभव है। संभवतः यह
उस समय इस्लाम की सत्ता स्थापित हो चुकी थी जिसका प्रधान
एकेश्वरवादी था। इसका प्रभाव संत कवियों पर पड़ा। वैसे ही
कोई हिन्दू पराजित हो जाने के बाद भी मुसलमानों को म्लेच्छ अ
छूत मानते थे जिससे सामाजिक समरसता बाधित हो रही थी।
इसलिए भी इन्होंने एकेश्वरवाद को समर्थन देकर समाज में
एकता और प्रेम स्थापित करने का प्रयास किया।